International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 6 Issue 8 || August. 2017 || PP 59-63

लाहौर नेशनल कॉलेज की स्थापना तथा क्रांतिकारी चेतना का अभ्युदय

डा. ईशा शर्मा
एसोसिएट प्रोफेसर, इतिहास विभाग,
एम एम एच कॉलेज, गाजियाबाद

शोध साराश :
भारतीय राष्ट्रीय आंदोलन के इतिहास में 1921 का वर्ष व्यापक गतिविधियों से पूर्ण रहा। यह वह समय था जब महात्मा गांधी के असहयोग आंदोलन ने भारत के जन–जन के ह्रदय में स्वतन्त्र होने की लालसा उत्पन्न कर दी थी। गांधीजी ने यह आश्वासन दिलाया था कि वे एक वर्ष में आजादी ले आएंगे। सितम्बर 1921 को एक सम्मेलन में उन्होंने यहां तक कह डाला कि इस वर्ष के अन्त के पहले स्वराज पाने का मुझे इतना पक्का विश्वास है कि 31 दिसम्बर के बाद स्वराज पाए बिना जिन्दा रहने की मैं कल्पना भी नहीं कर सकता।[1] उनके इसी आश्वासन के पीछे समग्र देश उनके साथ हो लिया।

गांधीजी के इस आंदोलन से पूर्व रूस की अक्टूबर क्रांति (1917) से मानव जाति के इतिहास में नया युग आरम्भ हुआ। यह नया युग था समाजवादी क्रांतियों और राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलनों का। युद्ध के समाप्त होते–होते क्रांति की शक्तियां सारी दुनियां में आगे बढ़ीं और साम्राज्यवाद तथा उपनिवेशवाद के गढ़ ढहाने लगीं। उनके प्रबल आघातों से शोषण और उत्पीड़न के दुर्ग धराशायी होते गए। भारत की जनता भी अपनी मुक्ति के संघर्ष में आगे बढ़ी, हर मोर्चे पर वह ब्रिटिश शासकों से मोर्चा लेने लगी।[2]

रॉलेट एक्ट के विरोध में गांधीजी के आह्वान पर देशव्यापी आंदोलन हुए। इन आंदोलनों को दबाने में ब्रिटिश सरकार ने कोई कसर नहीं उठा रखी। पंजाब में इसके दमन का भयानक रूप विश्व ने जलियांवाला बाग हत्याकाण्ड के रूप में देखा। अमृतसर की इन घटनाओं ने पंजाब को ब्रिटिश साम्राज्यवादियों के खिलाफ विद्रोह के द्वार पर लाकर खड़ा कर दिया। हंटर कमीशन की रिपोर्ट के अनुसार 14–15 अप्रैल को पंजाब के 50 शहरों और जिलों में प्रदर्शन हुए।[3]

सर्वत्र उत्तेजनापूर्ण वातावरण था। लाहौर में 11 अप्रैल को एक मस्जिद में कई हजार हिन्दुओं–मुसलमानों की जनसभा हुई जिसमें वक्ताओं ने बताया कि किस तरह अमृतसर के लोग ब्रिटिश शासकों से लोहा ले रहे हैं। श्रोताओं ने तालियों की गड़गड़ाहट के साथ लाहौर के भारतीय सैनिकों की बगावत के समाचार का स्वागत किया। इस सभा ने तार द्वारा दिल्ली के रेलवे कर्मचारियों को सूचित किया कि उत्तर–पश्चिम रेलवे के मजदूरों और किरानियों ने हड़ताल कर दी है। ये हड़ताली मजदूर सभी रेलवे कर्मचारियों से हड़ताल में शामिल होने का आह्वान कर रहे हैं। दिल्ली से हड़ताल का यह आह्वान सारे देश के रेलवे कर्मचारियों के पास भेजा गया। उपर्युक्त जनसभा के बाद बड़ा भारी जुलूस निकला जिसका नेतृत्व **'डण्डा फौज'** नामक संगठन ने किया। इस संगठन के अधिकांश सदस्य सिख थे। इनमें से बहुत से ऐसे लोग थे जो प्रथम महायुद्ध के समय मोर्चे पर थे। लड़ाई से वापस आने के बाद वे ब्रिटिश शासन को उखाड़ फेंकने के आंदोलन में सक्रिय हिस्सा ले रहे थे।[4]

पंजाब में 18 अप्रैल तक प्रदर्शन चलते रहे। लाहौर में 16 अप्रैल को ही मार्शल लॉ लागू कर दिया गया था। ब्रिटिश विरोधी आंदोलन उग्र रूप धारण कर शहरों में ही नहीं, गांवों में भी फैल गया। उत्तर और उत्तर पश्चिम के जिलों तथा मध्य भारत के बीच की सारी रेलवे लाईन के आसपास की सरकारी इमारतें और रेलवे स्टेशन जलाए गए। इन घटनाओं के बारे में 'टाइम्स् ऑफ इंडिया' ने 18 अप्रैल 1919 को लिखा : ''टेलीग्राम के तारों का काटा जाना, फौजी गाड़ियों को पटरी से उतारा जाना, रेलवे स्टेशनों का जलाया जाना, बैंकों पर आक्रमण, जेल से पुराने कैदियों को मुक्त कर देना सत्याग्रहियों के काम नहीं, वे आकस्मिक हंगामाबाजों के भी काम नहीं, वे तो क्रांतिकारियों के काम हैं''।[5]
इस आंदोलन को कुचलने के लिए ब्रिटिश शासकों ने पंजाब की निहत्थी जनता के खिलाफ पूरी लामबन्दी का रास्ता अपनाया। उनके इन जुल्मों की जानकारी हंटर कमीशन की रिपोर्ट व कांग्रेस की तहकीकात कमेटी से प्राप्त होती है। पंजाब की इन सारी घटनाओं की रिपोर्ट ब्रिटिश साम्राज्यवादियों ने सिर्फ भारतवासियों से ही नहीं, खुद अपने देशवासियों और अपने देश की पार्लियामेंट से भी छिपाई। इस हत्याकाण्ड का विस्तृत विवरण कांग्रेस नेताओं को चार महीने बाद मिला। ब्रिटिश जनता और ब्रिटिश पार्लियामेंट को तो आठ महीने बाद तक यह बात नहीं बताई गई। श्री रवीन्द्र नाथ ठाकुर ने क्रुद्ध होकर वायसराय को लिखा कि इतिहास में आजतक किसी भी सभ्य सरकार ने ऐसे अत्याचार नहीं किए। डायर ने पंजाब के साम्राज्य विरोधी आंदोलन को खून की नदी में डुबाकर भारत के मुक्ति संग्राम को दुर्बल कर देना चाहा था किन्तु हुआ बिल्कुल उल्टा।[6] उसके कामों की आलोचना करते हुए एक अंग्रेज लेखक गिलबर्ट स्लेटर ने लिखा : ''डायर ने पंजाब बचा लिया और भारत खो दिया।''[7] गांधीजी ने जलियांवाला बाग की घटना को ''Unexampled Act of Barbarity'' कहा।[8] गांधीजी ने कहा कि ब्रिटिश सरकार भारत पर शासन करने का अपना नैतिक अधिकार और

प्रतिष्ठा खो चुकी है। गांधीजी जिन्होंने प्रथम विश्व युद्ध के दौरान ब्रिटिश सरकार के साथ भरपूर सहयोग किया था अब सरकार विरोधी हो गए और विरोध प्रकट करने के लिए अपनी **'कैसरे हिन्द'** की उपाधि, **'जुलू वॉर मैडल'** और **'बोअर वॉर मैडल'** वापिस कर दिए।

ब्रिटिश सरकार द्वारा किए गए इस प्रकार के निन्दनीय व तिरस्कार पूर्ण कार्यों ने देश भर में क्रांतिकारी भावनाओं को जन्म दिया और इन्हीं भावनाओं व विचारों से क्रांतिकारी पुनः सक्रिय हो गए, विशेषतया पंजाब में, 1921 में बब्बर अकाली आंदोलन के रूप में, 1925 में हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन के रूप में, 1926 में नौजवान भारत सभा के रूप में और अन्य अनेकों उग्र आंदोलनों के रूप में। और इन भावनाओं को दिशा देने का कार्य और विचारों को परिपक्व बनाने और निश्चयों को दृढ़ बनाने का कार्य किया पंजाब के नेशनल कॉलिज (लाहौर) ने। ब्रिटिश सरकार की प्रतिक्रियावादी नीतियों ने सहयोगी गांधीजी को असहयोगी बना दिया था। इनका असहयोग आंदोलन समस्त भारतवर्ष में जंगल की आग की तरह फैल चुका था। जन–जन के हृदय में स्वाधीनता की तरंगें हिलोरें मारने लगीं थीं। आम जनता भी स्वयं को स्वाधीनता संग्राम का एक जिम्मेदार सिपाही समझकर, गांधीजी के वाक्यों को अंतिम शब्द मानकर स्वयं को आंदोलन हेतु समर्पित कर चुकी थी। विदेशी अदालतों, स्कूलों, कौंसिलों व पदवियों आदि का त्याग जारी था। ऐसे में गांधीजी ने अपने रचनात्मक कार्यक्रम के अन्तर्गत विद्यार्थियों के लिए राष्ट्रीय शिक्षा की व्यवस्था की। राष्ट्रीय शिक्षा के लिए जगह–जगह विद्यापीठों की स्थापना हुई। काशी विद्यापीठ, बिहार विद्यापीठ (बिहार), गुजरात विद्यापीठ (अहमदाबाद), तिलक महाराष्ट्र विद्यापीठ (पूना), अलीगढ़ मुस्लिम विद्यापीठ, पंजाब नेशनल कॉलेज (लाहौर) आदि इसके उदाहरण हैं।[9]

भारत में स्थापित ये राष्ट्रीय विद्यालय अपने में अनूठे थे। अधिकांश बड़े प्रांतों में एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय और राष्ट्रीय विद्यालय स्थापित हो चुके थे।[10] पंजाब में विद्यार्थियों में तथा राजनैतिक बैठकों में असहयोग वार्तालाप का प्रमुख विषय था। लाहौर स्थित डी.ए.वी. कॉलेज और सनातनधर्म कॉलेज के विद्यार्थियों ने हड़ताल कर दी। सरकारी सूत्रों के अनुसार 27 जनवरी को डी.ए.वी. कॉलेज के 950 विद्यार्थियों में से केवल 40 विद्यार्थी ही कॉलेज आए और 28 जनवरी को तो केवल 8 विद्यार्थी ही कॉलेज में उपस्थित थे। लाहौर के डी.ए.वी. कॉलेज, एस.डी. कॉलेज, एफ.सी.कॉलेज और दयाल सिंह कॉलेज करीब 15 दिनों तक बन्द रहे।

डी.ए.वी. कॉलेज के अधिकारियों ने हड़ताल में भाग लेनेवाले विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति देने से इंकार कर दिया। लाहौर के इस्लामिया कॉलेज को प्रिंसिपल के खिलाफ प्रदर्शन करने के कारण जबरन बंद कर दिया गया।[11] पंजाब प्रान्त के अन्य हिस्सों में भी बड़ी संख्या में विद्यार्थियों ने कॉलेज छोड़कर राष्ट्रीय शिक्षा संस्थाओं में प्रवेश ले लिया। अमृतसर का खालसा कॉलेज बन्द कर दिया गया। '**बहादुरगढ़ हाईस्कूल**' के अठारह विद्यार्थियों ने स्कूल छोड़ दिया और रोहतक के '**राश्ट्रीय वैश्य हाईस्कूल**' में प्रवेश ले लिया।

पंजाब के विद्यार्थियों का प्रथम सम्मेलन गुजरांवाला में 30 और 31 जनवरी 1921 को हुआ जिसमें डा. किचलू, लाला लाजपत राय, डा. एम. ए. अंसारी, पं. रामभज दत्त, लाला दूनी चन्द, अलीगढ़ के प्रो. मोहम्मद आलम, सरदार शार्दूल सिंह और लाला गोवर्धन दास आदि ने भी भाग लिया। गांधीजी ने भी भिवानी, कलानौर और रोहतक का दौरा किया। उन्होंने रोहतक के जाट कॉलेज का मुआयना किया जो कि बाद को राष्ट्रीय विद्यालय बन गया था।

पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी ने प्रान्त में राष्ट्रीय शिक्षा हेतु एक बोर्ड स्थापित किया जिसे राष्ट्रीय शिक्षा संस्था हेतु पाठ्यपुस्तकों का संधारण व निर्धारण करना था, निरीक्षण व्यवस्था करनी थी तथा परीक्षाओं हेतु व्यवस्था करनी थी।[12] पंजाब प्रान्तीय कांग्रेस कमेटी के प्रयत्नों से ही 1921 में एक राष्ट्रीय विश्वविद्यालय की स्थापना हुई जिसे ''**पंजाब कौमी विद्यापीठ**''(पंजाब नेशनल कॉलेज) के नाम से जाना गया। इस दिशा में पहला कदम लाला लाजपत राय द्वारा उठाया गया था। 1920 में स्वदेश लौटने पर लालाजी ने अमेरिका स्थित '**न्यूयार्क रैंड स्कूल ऑफ सोशियोलॉजी**' के अनुरूप भारत में भी एक संस्था स्थापित करने की योजना बनाई। इसी बीच 1अगस्त1920 को तिलक की मृत्यु ने लालाजी को इस संस्था को तिलक की स्मृति में उन्हीं के नाम पर रखने का एक सुअवसर दिया। यह संस्था **'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स'** थी। यही संस्था कालांतर में **'पंजाब कौमी विद्यापीठ'** में परिवर्तित हो गई। गुरू नानक खालसा कॉलेज, गुजरांवाला ने स्वयं को विश्वविद्यालय से असम्बद्ध कर लिया और औद्योगिक व व्यावसायिक किस्म की शिक्षा राष्ट्रीय तरीकों से देनी प्रारम्भ कर दी। इस प्रकार सरकारी सूत्रों के अनुसार 1921–22 में पंजाब में 69 राष्ट्रीय स्कूल और कॉलेज थे जिनमें 8,046 विद्यार्थी पढ़ते थे।

पंजाब नेशनल कॉलेज के वातावरण में राजनैतिक प्रवृत्तियों को छिपाने की आवश्यकता नहीं थी। इस कॉलेज की स्थापना का उद्देश्य ही कांग्रेस के कार्यक्रम द्वारा स्वराज प्राप्ति के लिए काम करनेवाले योग्य कार्यकर्ता तैयार करना था।[13] वातावरण सरकारी यूनिवर्सिटी के कॉलेजों से भिन्न था। दूसरे कॉलेजों में साधारणतः शिक्षा पाने और परीक्षा पास करने का उद्देश्य अपनी कल्पना में निश्चित कोई नौकरी पाना रहता था। नेशनल कॉलेज में यह बात नहीं थी। वहां शिक्षा का उद्देश्य साधारणतः अध्ययन ही था। इसमें अधिकतर वे ही विद्यार्थी प्रविष्ट हुए थे जिन्होंने असहयोग आंदोलन में स्कूल कॉलेज छोड़ दिया था और किसी न किसी रूप में उसमें भाग लिया था। स्वाभाविक है कि उनके मन राजनैतिक उत्तेजना और राष्ट्रीय चेतना से पूर्ण थे।

इस राष्ट्रीय विद्यालय में विद्यार्थी को एक भारतीय भाषा लेनी पड़ती थी – हिन्दी, उर्दू या पंजाबी, जिनकी लिपि उर्दू या गुरूमुखी होती थी। इसके अतिरिक्त सभी विद्यार्थियों को तीन अन्य विषय लेने पड़ते थे। ये विषय थे– इतिहास, अर्थशास्त्र व राजनीति। इन तीन विषयों में से विद्यार्थी को किसी एक विषय में विशेष अध्ययन (स्पेशलाइजेशन) करना होता था। उदाहरण के लिए – यदि कोई विद्यार्थी बी.ए. में 'इतिहास' विषय को विशेष अध्ययन हेतु चुनता था तो उसे भारतीय इतिहास के अतिरिक्त आधुनिक यूरोपीय इतिहास का भी विशेष अध्ययन करना होता था। यदि कोई विद्यार्थी 'अर्थशास्त्र' में विशेष अध्ययन करता था तो उसे अर्थशास्त्र के विस्तृत कोर्स को पढ़ना होता था, जैसे – भारतीय आर्थिक समस्याएं, आधुनिक अर्थशास्त्रीय विचारधारा, ट्रेड यूनियनवाद, समाजवाद और अर्थप्रबंध। इसी प्रकार राजनीति विषय लेनेवाले विद्यार्थियों को भी विशेष अध्ययन करना पड़ता था। गणित, साइन्स व दर्शन राष्ट्रीय विद्यालय में नहीं पढ़ाए जाते थे। इसी प्रकार बी.ए. का कोर्स सरकारी कॉलेजों में पढ़ाए जाने वाले 'ऑनर्स कोर्स' के समकक्ष था। जिसका उद्देश्य विद्यार्थियो को राजनैतिक रूप से तैयार करना था।

उस समय पंजाब के क्रिमिनल इनवैस्टिगेशन डिपार्टमेंट ने कौमी महाविद्यालय (राष्ट्रीय कॉलेज, लाहौर) से सम्बन्धित अपना एक गुप्त पत्र नं. सीक्रेट/91–8बी, लाहौर दिनांक 11 फरवरी, 1943, दिल्ली के पुलिस अधीक्षक के पास भेजा था जिसमें कहा गया था – 'विद्यार्थी नामील वर्तन आश्रम (स्टूडेन्टस् नॉन–कोऑपरेशन होम) 1921 में असहयोग आंदोलन के दौरान लाहौर में खोला गया था। परिणामस्वरूप अनेक विद्यार्थियों ने सरकारी स्कूल–कॉलेज छोड़ दिए तथा नेशनल कॉलेज, लाहौर में प्रवेश ले लिया (असहयोग आंदोलन के दिनों में इस कॉलेज में विद्यार्थियों की संख्या 153 थी) यह राष्ट्रीय विद्यालय, लाहौर के ब्रेडला हॉल स्थान पर 16मई1921 को प्रारम्भ हुआ जब तक कॉलेज का भवन तैयार हुआ तब तक कक्षाएं ब्रेडला हॉल में ही चलती थीं। धनाभाव के कारण यह विद्यालय 1926 में समाप्त हो गया। इस विद्यालय ने अनेक विद्यार्थियों को हिंसा का मार्ग अपनाने की प्रेरणा दी। इस राष्ट्रीय विद्यालय के कुछ विद्यार्थियों के नाम निम्न प्रकार हैं –
भगत सिंह –ए.एस.पी. सांडर्स की हत्या करनेवाला, भगवतीचरण, रामचन्द्र, बनारसीदास, रणवीर सिंह, यशपाल, छबीलदास–बी.ए.ऑनर्स, जो कि विद्यालय में प्रोफेसर और रजिस्ट्रार थे, जयचंद्र विद्यालंकार–प्रोफेसर, गोपाल सिंह कौमी, मोहनलाल और मोहनलाल गौतम, ये दोनों पीपुल्स सोसाइटी के थे, बाबू सिंह और शांतिस्वरूप इत्यादि।[14]

कॉलेज में अधिकांश विद्यार्थी पंजाब के भिन्न–भिन्न जिलों से आए हुए थे और कॉलेज के बोर्डिंग में ही रहते थे। कुछ विद्यार्थी संयुक्त प्रान्त से भी आए थे। आरम्भ में विद्यार्थियों की संख्या तीन सौ तक थी। रोहतक–हिसार के विद्यार्थियों का एक दल अलग था।

गांधीजी के असहयोग आंदोलन से प्रेरणा पाकर स्थापित हुआ नेशनल कॉलेज, लाहौर कालांतर में 1921 के बाद पुनः उत्पन्न हुए क्रांतिकारी आंदोलन का जन्मस्थान बन गया।[15] श्री भगवतीचरण वोहरा, सरदार भगत सिंह, श्री सुखदेव, श्री यशपाल आदि यहां एक दूसरे से मिले और पहचाना। श्री भगवीचरण वोहरा अपने इन साथियों से दो वर्ष आगे थे और कॉलेज के गम्भीर व जिम्मेदार छात्र समझे जाते थे।[16] दो वर्ष आगे होने के कारण साथी भगवतीचरण जी को बड़े भाई का सम्मान व व्यवहार प्रदान करते थे तथा उन्हें 'बापू भाई' कहकर सम्बोधित करते थे। श्री भगवतीचरण वोहरा, सुखदेव व भगत सिंह, ''तीनों ने दीन मुहम्मद तथा अन्य साथियों को लेकर क्रोपाटकिन जैसे रूसी सामाजिक क्रांतिकारियों के ढर्रे पर अध्ययन केन्द्र चलाना प्रारम्भ किया''।[17]

उधर गांधी जी के आंदोलन ने जोर पकड़ा ही था कि चौरी–चौरा काण्ड को लेकर गांधी जी ने देशव्यापी आंदोलन स्थगित कर दिया। क्रांतिकारी इसे 'बारडोली पीछे हट' कहते हैं। इसके फलस्वरूप देश में घोर निराशा छा गई। इसने क्रांतिकारी आंदोलन को नया बल दिया। क्रांतिकारी नेताओं ने नए उत्साह से कार्य करना प्रारम्भ किया। श्री यशपाल ने 'सिंहावलोकन' में लिखा है–'सत्याग्रह के मार्ग की विफलताओं पर हम लोगों की बहस उन दिनों बहुत चलती थी और प्रजातन्त्र और समाजवादी पद्धति की चर्चा भी जोर से होती थी। समाजवाद की ओर जाने का सीधा–सादा कारण था, रूस के सम्बन्ध में साहित्य हाथ आना। 'तिलक स्कूल ऑफ पॉलिटिक्स' और **''सरवेन्ट्स ऑफ दि पीपुल्स सोसाइटी''** के अतिरिक्त लाला लाजपत राय जी ने अपने पिता के नाम पर **''द्वारिकादास पुस्तकालय''** की भी स्थापना की थी। इस पुस्तकालय में राजनैतिक पत्र–पत्रिकाएं और सामयिक साहित्य अच्छी मात्रा में आता था। इस प्रकार नेशनल कॉलिज व द्वारिकादास पुस्तकालय में विचारशील व अध्ययनप्रिय युवकों का एक दल बन गया और क्रांतिकारी चेतना दिन प्रतिदिन विकसित होने लगी। इन युवकों ने अपने अतिरिक्त अन्य युवकों के हृदय में भी अध्ययन के प्रति रूचि जागृत करने का प्रयास किया। यह तय किया गया कि आचार्य राजाराम (जो पुस्तकालय के व्यवस्था संचालक थे) सर्वप्रथम अच्छी–अच्छी पुस्तकों का अध्ययन करें और जो अच्छी जचें उन्हें भगत सिंह व सुखदेव को पढ़ने के लिए दें। इसके बाद धीरे–धीरे सावधानी के साथ उन पुस्तकों को कॉलेजों के छात्रावासों तक पहुंचाने की व्यवस्था की जाए।[18]

इन छोटी–छोटी पुस्तिकाओं के लिखने में प्रिंसीपल श्री छबील दास जो ''लोक सेवक मण्डल'' के आजीवन सदस्य भी थे, से बहुत सहायता मिलती थी। मुझे याद है कि उन्होंने एक पुस्तिका ''भारत माता'' के नाम से और एक पुस्तक ''सोशलिज्म'' क्या है? शीर्षक से लिखी थी। उन्हें प्रकाशित भी किया गया था। प्रिंस क्रोपाटकिन का लेख ''नवयुवकों से

अपील'' (ऐन अपील टु दि यंग) भी प्रकाशित किया गया था और बहुत बड़ी संख्या में इसे युवकों एवं छात्रों में वितरित किया गया था।[19]

विद्यार्थियों में स्वतन्त्र होने की भावना को जागृत करने के लिए अनेक प्रयत्न किए गए। वीर सावरकर द्वारा लिखित **''भारत का प्रथम स्वातंत्र्य युद्ध''** (फर्स्ट वार ऑफ इण्डियन इण्डिपेण्डेन्स) पुस्तक सरकार द्वारा जब्त कर ली गई थी। अतः इसे गुप्त रूप से प्रकाशित करने की बात सोची गई। भगत सिंह ने आचार्य राजाराम शास्त्री की मदद से इस पुस्तक को दो खण्डों में प्रकाशित किया।

पठन–पाठन के अतिरिक्त नेशनल कॉलेज के विद्यार्थियों ने नाटकों के माध्यम से भी राष्ट्रीय भावना को जगाने का प्रयत्न किया। एक नेशनल क्लब की स्थापना की गई।[20] इस चेष्टा के दो कारण थे, एक नाटक खेलने की इच्छा और दूसरा नाटक को अपने विचारों का साधन बनाना इस नेशनल नाटक क्लब ने अपने नाटकों का मंचन किया। किसी उर्दू लेखक का ''महाभारत'' नामक एक नाटक था। उसके वार्तालापों में जगह–जगह परिवर्तन करके हम लोगों ने अपने लिए उपयोगी बना लिया था। इस नाटक का नाम रखा गया ''कृष्ण विजय'' व्यंजना से अंग्रेजों को कौरव और देशभक्तों को पांडव बना लिया था।[21] इसमें से कुछ गाने, विशेषकर प्रहसन भाग में, सम्मिलित कर लिए। इनमें से एक गाना था – ''कदे तूं वी हिन्दिया होश सम्हाल ओ''। हमारे नाटकों के ऐसे विदेशी सरकार द्रोही भागों को गैर कानूनी करार दे दिया गया था। दो नाटक हम लोगों ने लाहौर में खेले। फिर गुजरांवाला में प्रांतीय कांग्रेस की कान्फ्रेंस के अवसर पर भी ''भारत दुर्दशा'' नाटक खेला। इसके अतिरिक्त गुजरांवाला में ''महात्मा विदुर'' नाटक भी मंचित किया गया। इन नाटकों में होने वाले आय–व्यय का पूरा ब्यौरा रखा जाता था और इसके लिए एक रजिस्टर भी रखा जाता था। भगवती चरण जी राष्ट्रीय नाटक क्लब में उत्साहपूर्वक काम करते थे तथा आय व्यय का हिसाब वे ही देखा करते थे।

इस वर्णन से स्पष्ट हो जाता है कि ये युवक देश के भविष्य के प्रति कितने चिन्तित थे। अभी तो किसी क्रांतिकारी दल से ये लोग सम्बन्धित भी नहीं थे। ये वह लोग थे जो क्रांतिकारी ही पैदा होते हैं। पूर्णतः उन्नत विचारों और मनस्विता से परिपूर्ण अपने इन्हीं प्रश्नों और विचारों को आगे चलकर इन युवकों ने एक नवीन स्वरूप प्रदान किया।

जहां एक ओर पंजाब में इन देशप्रेमी युवकों का एक दल तैयार हो रहा था वहीं दूसरी ओर कानपुर में भी उग्र विचारों वाले विद्यार्थियों का एक समूह बन चुका था। शचीन्द्र नाथ सान्याल, जिन्हें बनारस षडयन्त्र केस में काले पानी की सजा मिली थी, अण्डमान से लौटने के बाद, उन्होंने क्रांतिकारी आंदोलन को व्यापक रूप देने का विचार किया।[22] उधर अनुशीलन समिति के लोग भी संयुक्त प्रान्त में क्रांतिकारी संगठन की चेष्टा कर रहे थे। इसी उद्देश्य से योगेश चन्द्र चैटर्जी ने संयुक्त प्रान्त में क्रांतिकारी संगठन खड़ा करना प्रारम्भ कर दिया।

भगत सिंह का परिचय जयचन्द्र विद्यालंकार जी के माध्यम से श्री शचीन्द्र नाथ सान्याल से पहले ही (उनके लाहौर आगमन के दौरान) हो चुका था। शचीन्द्र जी के प्रयत्नों से बंगाल की अनुशीलन समिति द्वारा भेजे गए योगेश चन्द्र चैटर्जी के संगठन को सम्मिलित कर **''हिन्दुस्तान रिपब्लिकन एसोसिएशन''** की स्थापना 1924 में हो गई। इस संस्था की प्रथम कल्पना, विधान निर्माण और संस्था की प्रथम प्रान्तीय बैठक कानपुर में ही हुई। इस संस्था की ओर से एक विधान पत्र तैयार किया गया था जो पीले कागज पर छपा था। इसीलिए इस विधान **''दि रिवोल्यूशनरी''** को क्रांतिकारियों में **''येलो पेपर''** (पीत पत्र) के नाम से भी जाना जाता था।[23] गुप्त संगठन के कार्यक्षेत्र को तैयार करने के उद्देश्य से यह पर्चा सारे भारतवर्ष में एक साथ वितरित किया गया था। इस ''येलो पेपर'' ने क्रांतिकारी आंदोलन में उस समय एक महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।

इस प्रकार स्पष्ट हो जाता है कि लाहौर नेशनल कॉलेज में देशभक्ति, राष्ट्रवाद और भारत को विदेशी दासता से मुक्त कराने की जो तीव्र भावना नवयुवकों में जागृत हुई उसने कालांतर में क्रांतिकारी आंदोलन के मार्ग को और अधिक प्रशस्त करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई।

संदर्भ सूची

1. बालाबुशेविच एवं द्याकोव द्वारा संपादित– द कंटेम्परेरी हिस्ट्री ऑफ इंडिया, पृ. 83
2. अयोध्या सिंह– भारत का मुक्ति संग्राम, द मैकमिलन कंपनी ऑफ इंडिया लिमिटेड 1977, पृ. 401
3. हंटर कमेटी की रिपोर्ट– लंदन, 1920, पृ. 38
4. उपरोक्त
5. एम. ओ'डायर– इंडिया एज आइ न्यू इट 1885–1925, {लंदन,1925}, पृ. 286
6. अयोध्या सिंह– भारत का मुक्ति संग्राम, पृ. 40
7. गिलबर्ट स्लेटर– सदर्न इंडिया, इट्स पॉलिटिकल एण्ड इकॉनॉमिक प्राबलम्स, {लंदन,1946}, पृ. 296
8. जगदीश एस. शर्मा– इंडियन स्ट्रगल फॉर फ्रीडम, सलैक्टेड डाक्यूमेंटस् एण्ड सोर्सेज वॉल्यूम 11, दिल्ली, पृ. 383
9. अयोध्या सिंह– भारत का मुक्ति संग्राम, पृ. 401
10. कामरेड रामचन्द्र– नौजवान भारत सभा एण्ड हिन्दुस्तान सोशलिस्ट रिपब्लिकन एसो./आर्मी, नई दिल्ली, 1986, पृ.10
11. गृह विभाग {राजनैतिक} भारत सरकार, प्रोसीडिंग्स जनवरी 1921

12. दि ट्रिब्यून–26.5.1921
13. यशपाल– सिंहावलोकन{भाग प्रथम}, पृ.72
14. सीक्रेट पुलिस नोट, फाइल नं. 88, क्विट इंडिया 1942 फाइल
15. यशपाल– सिंहावलोकन{भाग प्रथम}, पृ.73
16. राजेन्द्र कसवां– क्रांतिकारी भगवतीभाई– पूर्वोक्त, पृ.9
17. जितेन्द्र नाथ सान्याल– पूर्वोक्त, पृ.28
18.राजाराम शास्त्री– अमर शहीदों के संस्मरण, साधना साहित्य मंदिर प्रकाशन, कानपुर 1981 पृ.88
19. राजाराम शास्त्री– अमर शहीदों के संस्मरण – पूर्वोक्त, पृ.88
20. दुर्गा जी के साक्षात्कार से उद्धृत
21. यशपाल– सिंहावलोकन {भाग प्रथम} पृ. 86/87
22. रामविलास शर्मा– भारत में अंग्रेजी राज और मार्क्सवाद, राजकमल प्रकाशन, दिल्ली,1982, पृ.89
23. लक्ष्मीकांत त्रिपाठी (सम्पादक)– कानपुर के विद्रोही, कानपुर,1948,पृ. 114